थारो दूध छे केवल ब्रम्ह संजोणी हरी की कामधेनु हो

थारो दूध छे केवल ब्रम्ह , संजोणी हरी की कामधेनु हो

कामधेनु तो आकाश रहती , ह्रदय चारो चरती
तिरवेणी को पाणी पीती , भाई रे उनी मुनि करत गोठाण

साँझ पड़े संजोणी घर आवे , ओहम भजतों तानो
मन वाछरू उल्टो ध्यावे , भाई रे मेल्यों ते प्रेम को पानों

सतगुरु आसण धुवण बैठे , तुरिया दोहणी हाथ
अनहद के घर घुम्मर बाजे , दुह ते अखंड दिन रात

ब्रम्ह आगन पर दूध तपायो , क्षमा शांति लव लागी
अरद उरद म दही जमायो , ब्रम्ह म ब्रम्ह मिलाय

ओहम शब्द की रवि बणाई , घट अंदर लव लागी
माखन माखन संत बिलोयो , भाई रे छांछ जगत भरताय

कामधेनु सतगुरु की महिमा , बिरला जण कोई पावे
कहे जण सुंदर गुरु की किरपा , भाई रे जोत माँ जोत समाय

प्रेषक प्रमोद पटेल
यूट्यूब पर
1.निमाड़ी भजन संग्रह
2.प्रमोद पटेल सा रे गा मा पा
9399299349
9981947823

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/21623/title/tharo-dudh-che-kewal-bramh-sanjoni-hari-ki-kamdhenu-ho

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |